International Journal of Applied Research 2015; 1(11): 256-258

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 256-258
www.allresearchjournal.com
Received: 16-08-2015
Accepted: 18-09-2015

संजय खंडेलवाल
शोधार्थी, एम.फिल. मीडिया स्टडीज़, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर

डा॰ नरेंद्र त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष, इलेक्ट्रोनिक मीडिया विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर

Correspondence
संजय खंडेलवाल
शोधार्थी, एम.फिल. मीडिया स्टडीज़, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर

दूरस्थ शिक्षा में नवीन शिक्षण तकनीक

संजय खंडेलवाल, नरेंद्र त्रिपाठी

प्रस्तावना

21वीं सदी में तकनीक, परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसने न केवल हमारी जीवन शैली को बदला है बल्कि हमारे कार्यो के साथ.साथ समाज के सामने कई चुनौतियों और दबावों को भी जन्म दिया है. राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में सार्थक तथा तेजी से बदलाव हो रहे हैं. सूचना एवं संचार तकनीक ने शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा के आयामों को भी बदल कर रख दिया है और इस बदलाव का खासा महत्व भी है. यह सच है की इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब के आने से सूचनाओं के आदान.प्रदान के साथ सूचना विस्फोट का भी चलन बढ़ा है. लेकिन सूचना और संचार तकनीक के विकास ने दूरस्थ शिक्षण को दूरस्थ न रखकर प्रत्यक्ष बना दिया है. इस कारण शिक्षा में सुधार तथा बदलाव को फलीभूत करने के लिये रणनीतियों तथा निर्देशों का पालन करना शिक्षकों और शिक्षु दोनों के लिए जरूरी हो गया है. आज कई विद्यालय एवं विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को या तो अपना चुके हैं या अपनाने को आतुर हैं.

इतिहास

दूरस्थ शिक्षा का इतिहास तब का है जब मेलविल डीवे ने पुस्तकालय शिक्षण के लिये कोलंबिया विश्वविद्यालय में एक औपचारिक कार्यक्रम की शुरुआत की. वर्ष 1888 में डीवे ने अलबनी के समक्ष एक खास तरह के पुस्तकालय तथा छोटे पुस्तकालय सेवा में पत्राचार पाठयक्रम को शुरू करने की अपनी तीव्र इच्छा जतायी और वर्ष 1903 में अमेरीकन लाइब्रेरी एसोसिएसन (ALA) कमिटी ने लाइब्रेरी प्रशिक्षण के विषय में विद्यालयों तथा अग्रणी पुस्तकालयों को पत्राचार कार्यो के लिए औपचारिक अधिकार प्रदान कर दिया.

परिभाषा

लॉ लाइब्रेरी जर्नल (1999, v91) के अनुसार दूरस्थ शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो कैम्पस के बाहर के छात्रों को एक दूरी पर तथा लचीले समयावधि में शिक्षा दे, लेकिन इसमें निर्देशक के निर्देश पर छात्रों को स्वंय पढ़ाई करनी होगी और उनके निर्देशों का अनुपालन भी.

लॉ लाइब्रेरी के ही जर्नल (1999, v92) के अनुसार दूरस्थ शिक्षा एक निर्देशात्मक व्यवस्था है, जिसमें शिक्षक तथा शिक्षु भौतिक रूप से अलग.अलग स्थानों पर होते है और एक माध्यम के जरिये संचार की आवश्यकता को पूरी करते हैं.

दूरस्थ शिक्षा जरूरी क्यों?

कई लोगों के मन में ये खयाल आ सकता है कि आखिर दूरस्थ शिक्षा जरूरी क्यों है? दरअसल शिक्षा दूरस्थ हो या कक्षा में, यह अर्जित करनी जरूरी है. इसकी पुष्टि हम विलियम बटलर यीट्स के एक कोट से कर सकते हैं. षशिक्षा सिर्फ किसी रिक्त स्थान को भरना ही नहीं है अपितु एक चिंगारी को आग में बदलना है."

दूरस्थ शिक्षा के विकास के पीछे महत्वपूर्ण उद्देश्य यही था कि जो शिक्षा से अलग हैं या किसी कारण वह शिक्षा के केन्द्रों तक नहीं पहुँच पा रहे हैं उन तक शिक्षा पहुंचे. दूरस्थ शिक्षा के केंद्र विद्यार्थियों को मार्गदर्शन न मिलने और विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के अभाव को खत्म करने की भरपूर कोशिश में हैं.

आर्थिक, शारीरिक, भावनात्मक या पारिवारिक परेशानियों से घिरे लोगों के बीच दूरस्थ शिक्षा ने एक बड़ी उम्मीद जागते हुए अपने पैर तेजी से पसारे हैं और ऑनलाइन शिक्षा या वेब आधारित शिक्षा के आ जाने के

बाद तो दूरस्थ शिक्षा में जबरदस्त फैलाव हुआ है. इतना ही नहीं इस दूरस्थ शिक्षा तकनीक के तकनीकी विकास ने और वैश्वीकरण के दौर ने मिलकर एक बेहतरीन व लचीली शिक्षण व्यवस्था को असंभव से संभव कर दिखाया यूज़नेट, न्यूजग्रूप तथा विडियो टेलीकॉन्फ्रेंसिंग के जरिये एक असली कक्षा.सा माहौल तैयार किया जा रहा है।

नवीन शिक्षण तकनीक /Innovative Teaching Technique (ITT)

नवीन शिक्षण तकनीक ने आज दुरूह दूरस्थ शिक्षा को काफी सहज बना दिया है. इसके तकनीकों के कुछ पहलुओं पर नज़र डालते हैं.

1. इंटरनेट (Internet) - इंटरनेट एक ऐसा सूचना तंत्र है जहां ज्ञान का प्रचुर भंडार उपलब्ध है. इंटरनेट को एक विशाल एलेक्ट्रोनिक लाइब्रैरी भी कहा जा सकता है. बटन दबाने मात्र से अपनी रुचि के अनुकूल पुस्तकें पढ़ी जा सकती है. इसकी मदद से छात्र पठन.पाठन के विषय से संबंधित सामग्री हासिल कर सकते हैं तथा उसे सुव्यवस्थित ढंग से विवरणिका के रूप में शामिल कर सकते हैं. इस पर हर विषय की लगभग जानकारी उपलब्ध है.

2. वेब आधारित निर्देशन (Web based Instruction) -

रिलेन और गिल्लेनी ने वर्ष 1997 में कहा कि वेब आधारित निर्देशन, निर्देशन का नवीन तरीका है, जिसमें वेब टूल्स ;जववसेद्ध का उपयोग किया जाता है. आज के दौर में विभिन्न वेबसाइट्स उपलब्ध हैं जो हर प्रकार कि जानकारी मुहैया करवाती है, चाहे आप दुनिया के किसी छोर पर हों. केसी ;ब्रेमलद्ध ने वर्ष 1998 में वेब मॉडेल की विशेषता को निम्न प्रकार से बताया .

सूचनाओं का साधन . वर्ल्ड वाइड वेब का प्रत्येक पेज वेब पेज कहलाता है. वह स्थान जहां ये वेब पेज संग्रहित रखे जाते हैं, वैबसाइट कहलाता है. ये वेबसाइट एक बहुत ही सरल व सुगम स्थान है जहां परम्परागत पाठयक्रम ;बवनतेमेद्ध के लिए सहायक सूचनाएँ उपलब्ध हैं.

इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक . कई शिक्षण संस्थाओं का झुकाव वेबसाइट कि ओर बढ़ रहा है ताकि वे सूचनाओं को संग्रहीत कर उसे बेहतर तरीके से पाठकों को दे सकें. हालांकि वेबसाइट के द्वारा शिक्षक तथा शिक्षु के बीच सीधा संबंध स्थापित नहीं होता लेकिन छात्र अपनी पठन सामग्री वेब पेज.मइ चंहमद्ध पर जाकर प्राप्त कर सकते हैं.

शिक्षक . कई वेब आधारित पाठयक्रम ऐसे भी हैं जिनमें छात्रों के बीच व्यक्तिगत संचार की भी व्यवस्था है, वे ई.मेल और चैट रूम की सहायता से एक.दूसरे से जुड़ सकते हैं.

शिक्षक व शिक्षुओं के बीच एक संचार माध्यम . इस मॉडल के तहत छात्र, शिक्षकों से सीखते तो हैं, लेकिन वेब से नहीं बल्कि वेब के द्वारा. वेब उनके मध्य एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देता है जिससे उनके बीच एक व्यक्तिगत जुड़ाव होता है.

शायद इसी बात को समझते हुए रीवस ने वर्ष 1997 में कहा था कि वेब आधारित शिक्षाय मीडिया की खूबियों और प्रस्तुतीकरण के आयामों का एक शक्तिशाली मिश्रण है. ठीक इसके एक साल बाद वर्ष 1998 में केसी ;ब्रेमलद्ध ने वेब के महत्व को बताते हुए कहा श्वेब आधारित शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की एक बड़ी संख्या को सफलतापूर्वक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना है."

3. कंम्पूटर की सहयता से शिक्षण (Computer assistance learning) - पिछले दशक में कम्प्युटर आधारित तकनीक के विकास ने विज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में कई नए द्वार खोल दिये हैं. सीडी. रोम (CD-ROM) पर उपलब्ध मल्टीमीडिया स़ॉफ्टवेर ने प्रयोगात्मक कार्यों, लैब लेक्चर और ट्यूटोरियल्स के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

4. सेमिनार (Seminar) - कई संस्थानो द्वारा आपसी तालमेल तथा पहचान को बढ़ाने के लिए सेमिनार का आयोजन किया जाता है, जिसमें हर छात्र को हिस्सा लेना अनिवार्य होता है. उन्हे बोलने का मौका दिया जाता है. इतना ही नहीं सबसे बेहतरीन वक्ता को पुरस्कृत भी किया जाता है. जिससे छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती है और उनकी क्षमता का विकास होता है. सेमिनार की सूचना एवं संबन्धित सारी तैयारी ऑन.लाइन होती है.

5. व्र्चुअल प्रयोगशाला . व्र्चुअल प्रयोगशाला के माध्यम से तमाम संबंधित उपकरणों को ऑन स्क्रीन उपलबद्ध कराया जाता है ताकि छात्र विभिन्न प्रयोगों द्वारा नयी चीज़ें सीख सकें. इस दृश्य.श्रव्य (audio-visual) माध्यम के द्वारा शिक्षक एवं छात्रो के बीच उच्च स्तर का द्विपक्षीय संचार स्थापित होता है. यह विधि भी काफी फायदेमंद साबित हो रही है.

6. छात्र . एक प्रोजेक्ट सहायक . विभाग में चल रहे अनुसंधान कार्यों में छात्र सहायक के रूप में अपना योगदान देते है, जिससे न केवल वे प्रोत्साहित होते हैं बल्कि उनमें नेतृत्व क्षमता का भी विकास होता है.

7. टेलीकॉन्फ्रेंसिंग. टेलीकॉन्फ्रेंसिंग का विकास दूरस्थ शिक्षा की कमीयों को दूर करने के लिए किया गया. इसके तहत उपग्रह संचार के माध्यम से जीवंत प्रसारण एवं द्विपक्षीय संचार स्थापित होता है. इस प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न शंकावों का समाधान तुरंत किया जाता है.

8. टेलीमेटिक शिक्षा . इसके द्वारा छात्रों को शिक्षण कार्यक्रम और शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है. जिससे कम समय में और किसी भी स्थान पर छात्रों को मन मुताबिक शिक्षा के अवसर मिल सकें.

9. क्विज . उपरोक्त सभी तकनीकों के बाद सबसे ज्यादा प्रेरित करने वाली तकनीक है क्विज. जिसमें आमतौर पर 6 राउंड होते हैं. पहला राउंड प्रश्न.उत्तर का होता है, दूसरा और तीसरा जंबल्ड शब्दों का औऱ बहुवैकल्पिक प्रश्न का होता है, चौथे, पांचवे और छठे राउंड में रैपिड प्रश्न व खास समस्याओं से जुड़े प्रश्न होते हैं. क्विज की सहायता से छात्रों में याद करने की क्षमता विकसित होती है. साथ ही उनका शब्दकोश भी मजबूत होता है. जिससे छात्रों की बुध्दिमत्ता बढ़ती है.

नवीन शिक्षण तकनीक के उपयोग के कुछ सफल उदाहरण.

चंडीगड़ के सरकारी मेडिकल कॉलेज के दर्शनशास्त्र विभाग ने कई ऐसी नवीन शिक्षण तकनीक की शुरुआत की है, जिसके द्वारा विषय को दिलचस्प और रुचिकर बनाया गया है. सीडी.रोम, पावर पॉइंट प्रस्तुती. करण, लैब आधारित शिक्षण, व्र्चुअल प्रयोगशाला, सेमिनार, दृश्य.श्रव्य माध्यम की सहायता और क्विज आदि ऐसी ही तकनीकें हैं, जिनका इस्तेमाल शिक्षण के लिए किया जा रहा है. (नागेश्वरी 2004)-

थाइलैंड के STOU (Sukhothai Thammathirat Opan University) विश्वविद्यालय ने चार स्तरों पर दूरस्थ शिक्षा के लिए पाठयक्रमों की शुरुआत की है. स्नातकोत्तर डिग्री, स्नातक डिग्री, सर्टिफिकेट कोर्स और

निरंतर (रगुलर) शिक्षा. यह पाठयक्रम प्रत्येक विषय में उपलब्ध हैं. STOU ने एक मल्टी मीडिया दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तैयार की है जिसे STOU Plan के नाम से जाना जाता है. यह छात्रों को स्वंतत्र रुप से बिना कक्षाओं में उपस्थित हुए शिक्षित करता है. इसके द्वारा छात्रों को वर्कबुक और टेक्स्ट बुक मेल किए जाते हैं. इतना ही नहीं यदि छात्रों को और अधिक सहायता की जरूरत पड़ती है तो उन्हें औडियो कैसेट, रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम से मदद की जाती है, इसके साथ ही प्रकाशित सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है.

एक और उदाहरण देखते हैं प्रेटोरिया विश्व विद्यालय का. यहाँ टेलीमेटिक शिक्षा के अंतर्गत campus के छात्र भी टेलीमेटिक छात्र के रुप में ही नामांकित किए जाते हैं. उनके पाठ्यक्रम में वेब आधारित पाठन शामिल होता है. वेब आधारित टेलीमेटिक पाठन में कोर्स पूरी तरह वेब आधारित होता है या यूं कहें की पूरी पाठ्यसामग्री ही वेब पर उपलब्ध होती है. यहाँ तक कि संवाद भी वेब के द्वारा ही होता है. यानि छात्र और शिक्षक के बीच सम्पर्क स्थापित करने का जरिया वेब ही होता है.

गुजरात विश्वविद्यालय में एम.एड प्रोग्राम के अंतर्गत उच्च कोटि के शिक्षकों को तैयार किया जाता है. जिसके तहत उन्हें .

- शैक्षणिक योजना एंव प्रबंधन
- शिक्षा में अनुसंधान
- आकलन
- मार्गदर्शन एवं काउंसलिंग
- शिक्षा तकनीक
- शिक्षा में सूचना तकनीक

आदि के गुर सिखाये जाते हैं. इसका उद्देश्य एक मजबूत दृष्टिकोण रखने वाला शिक्षक तैयार करना है. –

न्यूयार्क का जनता पुस्तकालय 'साइंस इंडस्ट्री एंड बिजनेस लाइब्रेरी (SIBL) दुनिया का सबसे बड़ा सूचना केन्द्र है, जो पूरी तरह विज्ञान और व्यवसाय को समर्पित है. यह जनता को 18 कक्षाएं मुफ्त में प्रदान करता है.

आकलन

नवीन शिक्षण तकनीकों के उपयोग के लिए नवीन परीक्षण कार्यों की आवश्यकता होती है. छात्रों की प्रगति का आकलन विभिन्न परीक्षण के द्वारा होना चाहिए ना की किसी प्रारंभिक परीक्षण द्वारा. इस प्रकार का आकलन करने के लिए कक्षा प्रस्तुतीकरण, पोस्टर्स परीक्षाएँ आदि बेहद कारगर साबित हो रही हैं. इसके अलावा आपसी संवाद की प्रक्रिया का भी अहम योगदान है. इस प्रकार के आकलन के लिए गिल्बर्ट और मूरे ने दो विधाओं का जिक्र किया है. पहला सामाजिक इंटरेक्सन जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति पठन.पाठन की सामग्री के विषय में आपस में चर्चा करते हैं और दूसरा निर्देशात्मक इंटरेक्सन जिसमें व्यक्ति औऱ पठन सामग्री के बीच संवाद होता है.

निष्कर्ष .

आज जब पूरी दुनिया शिक्षा के क्षेत्र में एक नयी जागृति का साक्षात्कार कर रही है, ऐसे में छात्रों के ऊपर एक नैतिक जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है कि वे खुद ही सिर्फ है और शिक्षकों की भूमिका महज एक सहायक की रह गई है. दूरस्थ शिक्षा में नवीन शिक्षण तकनीक के उपयोगों के कारण शिक्षुओं को मुख्य पठन सामग्री के पूर्व दो प्रकार की अन्य पठन सामाग्री दिये जाने की जरूरत है. पहला, कम्प्युटर साक्षरता की शिक्षा और दूसरा इंटरनेट और वेब कौशल की जानकारी. जिससे वे विषय सामाग्री को खोजने, डाउनलोड या अपलोड करने के तरीकों का बखूबी इस्तेमाल कर सकें. संयोजन की दृष्टि से अगर देखें तो इसे बेहतर ढंग से समझने के लिये एक मिश्रित मॉडेल विकसित करने की जरूरत है जिसमें उपग्रह टेलीकॉन्फ्रेंसिंग के साथ.साथ हैंड्स-ऑन सत्र का समायोजन हो. इसके साथ ही छात्रों से सीधा संवाद स्थापित करने के लिए प्रेजेंटेशन, शिक्षण सामाग्री से जुड़े पोस्टर्स, उनके कार्यों का प्रदर्शन, प्रोजेक्ट कार्य व परीक्षा पत्र का आकलन किया जाना जरूरी है ताकि सही मायने में उनके विकास का आकलन किया जा सके. इन तौर.तरीकों से वे वास्तविक परिस्थितियों का सामना करने के लिए खुद को सक्षम बना पाएंगे.

यह शोध.पत्र अन्वेषणात्मक एवं क्रियात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है.

संदर्भ- सूची

1. Barron DD. The Use of Distance Education in United States library and Information Science, 1990.
2. History and Current Perspectives. Education for Information. 8, 325- 339.
3. Bothma, Theo J.D. and Snyman Retha (MMM). Web-supported teaching in the Department of Information, 2000.
4. Science at the University of Pretoria: a case study. In 66th IFLA Council and General Conference,
5. Jerusalem, Israel, 13 – 18 Aug, 2000.
6. Innovative Teaching Techniques for Distance Education M. Natarajan Communications of the IIMA 2005; 5(4):79.
7. General Conference Bangkok, Thailand, 18 – 24 Aug, 2002.
8. Casey D. Learning From or Through the Web: Models of Web Based Education, 1998.
9. Gilbert L, Moore DR. Building Interactivity into Web Courses: Tools for Social and Instructional, 1998.
10. Instruction. New Jersey: Educational Technology Publications. Nageswari. K Sri, etal. - Pedagogical effectiveness of innovative teaching methods initiated at the, 2004.
11. Department of Physiology, Government Medical College, Chandigarh. Advances in Physiology Education 28, 51-58.
12. Reeves TC. Effective Dimensions of Interactive Learning on the World Wide Web. In Khan, B.H. (ed.), 1997.
13. 65th IFLA Council and General Conference, Bangkok, Thailand, 20 – 28 Aug, 1999.
14. Sacchanand, Chutima. Information literacy instruction to distance students in higher education: Librarians, 2002.